गीता का शब्दकोश और अनुक्रमणी

Grammatical Dictionary

of the Gita

This Book is available at

www.books-india.com

Prof. Ratnakar Narale

RatnakaR
PUSTAK BHARATI
BOOKS-INDIA

Author :

Dr. Ratnakar Narale, Ph.D (IIT), Ph.D. (Kalidas Sanskrit Univ.)
Prof. Hindi. Ryerson University, Toronto

Title :

Gita Ka Shabdakosh,

Grammatical Dictionary of the Gita, New Edition

गीता का शब्दकोश और अनुक्रमणी

Gita Ka Shabdakosh, New Edition, is a systematically laid out one-of-a-kind All-in-one Gita-Dictionary, Gita-Grammar, Gita-Thesaurus, Gita-Reference and Gita-Index, in Devanagari Sanskrit-Hindi.

Published by :
Pustak Bharati (Books India)
books.india.books@gmail.com
www.books-india.com

Published For :
Sanskrit Hindi Research Institute, Toronto

Copyright © 2014
ISBN 978-1-897416-64-8

© All rights reserved. No part of this book may be copied, reproduced or utilised in any manner or by any means, computerised, e-mail, scanning, photocopying or by recording in any information storage and retrieval system, without the permission in writing from the author.

संक्षेप सूची

अक॰	अकर्मक, अकर्मक क्रिया (*Intransitive Verb*)
अव्य॰	अव्यय, अव्ययी, अव्ययी शब्द (*Indeclinable*)
अदा॰	अदादि, √अद् इत्यादि का दूसरा गण
अन्य॰	अन्य पुरुष, तृतीय पुरुष (*Third Person*)
अस॰	अव्ययीभाव समास (*Adverbial Compound*)
आत्म॰	आत्मनेपदी, *(action for oneself)*
आशी॰	आशीर्लिङ् (*Precative or Benedictive*- may -- be)
इच्छा॰	इच्छार्थक *(desiderative)*
उत्तम॰	उत्तम पुरुष (*First Person*)
उदा॰	उदाहरणार्थ, जैसे॰ (*for example*)
उभ॰	उभयपदी, *(dual action)*
एक॰	एकवचन (*Singular Number*)
कस॰	कर्मधारय समास (*Appositional Compound*)
कर्त॰	कर्तरि, कर्तरि प्रयोग (*Active Voice*)
कर्म॰	कर्मणि, कर्मणि प्रयोग (*Passive Voice*)
क्त॰	कर्मणि भूतकालिक धातुसाधित (*Past Passive Participle*)
क्तवतु॰	कर्तरि भूतकालिक धातुसाधित (*Past Active Participle*)
क्त्वा॰	पूर्वकालिक धातुसाधित त्वान्त अव्यय (*Past Indeclinable Participle- gerundive*- having done)
क्र्या॰	क्रयादि, √क्री इत्यादि का नवां गण
क्रि॰	क्रियापद (*Verb*)
क्रिवि॰	क्रियाविशेषण (*Adverb*)
चतु॰	चतुर्थी विभक्ति, सम्प्रदान (को, के लिए, के वास्ते)
चुरा॰	चुरादि, √चुर् इत्यादि का दसवां गण
जुहो॰	जुवादि॰, जुहोत्यादि, √हु इत्यादि का तीसरा गण
तस॰	तत्पुरुष समास (*Determinative or Dependent Compound*)

तना॰ तनादि √तन् इत्यादि का आठवां गण

तुदा॰ तुदादि, √तुद् इत्यादि का छठा गण

तुम॰ हेत्वर्थक धातुसाधित तुम् प्रत्ययान्त अव्यय

तृती॰ तृतीया विभक्ति (से) (*Instrumental Case*)

द्वन्द्व॰ द्वन्द्व समास (*Dual, Copulative or Aggregative Compound*)

दिवा॰ दिवादि, √दिव् इत्यादि का चौथा गण

मध्य॰ द्वितीय पुरुष, मध्यम पुरुष (*Second Person*)

द्विगु॰ द्विगु समास (*Numeral or Collective Compound*)

द्विती॰ द्वितीया विभक्ति (को) (*Accusative Case*)

द्वि॰ द्विवचन (*Dual Number*)

धासा॰ धातुसाधित

न॰ नपुंसकलिंग, नपुंसकलिंगी नाम (*Neuter Gender*)

नत॰ नञ् तत्पुरुष समास

नब॰ नञ् बहुव्रीहि समास

नि॰ नियम, संधि–विग्रह नियम क्रमांक

पर॰ परस्मैपदी, *(action for someone else)*

पंच॰ पंचमी विभक्ति, अपादान (से, की अपेक्षा) (*Ablative Case*)

पु॰ पुंलिंग, पुल्लिंग, पुल्लिंग नाम (*Masculine Gender*)

प्रथ॰ प्रथमा विभक्ति (ने), कर्ता (*Nominative Case*)

प्रयो॰ प्रयोजक (*Causative*)

प्रादि॰ प्रादि रूप अथवा प्रादि समास

बस॰ बहुव्रीहि समास (*Attributive or Relative Compound*)

बहु॰ बहुवचन, अनेक वचन (*Pleural Number*)

भवि॰ भविष्यत् काल, भविष्यत् काल वाचक (*Future Tense*)

भूत॰ भूत काल, भूत काल वाचक (*Past Tense*)

भ्वादि॰ भ्वादि, √भू इत्यादि का पहला गण

रुधा॰ रुधादि, √रुध् इत्यादि का सातवां गण

लङ् अनद्य भूतकाल, आज के पूर्व का अपूर्ण (*Imperfect Pase Tense*- I I was)

लट् सामान्य अथवा साधारण, वर्तमान काल, प्रथमताख्यात

(*Present Tense*- is, am, are)

लिट् परोक्ष भूत काल, न देखा हुआ, अनद्यतन (*Perfect*- have or has been)

लुट् अनद्य भविष्य, आज के बाद का (*First or Definitive Future*- shall or will be)

लुङ् साधारण भूत काल (*Aorist*- was or had been)

लृङ् हेतुहेतुमद् अर्थ क्रियातिपत्त भूत अथवा भविष्य (*Conditional*- if -should be)

लृट् सामान्य भविष्यत् काल, ईलाख्यात (*Second or Continuous Future*- shall or will be)

लोट् आज्ञार्थक, निवेदनार्थक, ऊआख्यात (*Imperativa*- let)

ल्यब॰ पूर्वकाल वाचक ल्यबन्त धातुसाधित अव्यय
(*Past Participle with a preposition or indeclinable prefix other than* अ)

वर्त॰ वर्तमान काल, वर्तमान काल वाचक (*Present Tense*)

वि॰ विशेषण (*adjective*)

विधि॰ विध्यर्थी, वाख्यात, विधिलिङ् (*Potential*- may be)

विना॰ विशेष नाम (*Given Name, proper noun*)

षष्ठी॰ षष्ठी विभक्ति, सम्बन्ध (का, की, के; रा, री रे) (*Genitive Case*)

संख्या॰ संख्या वाचक (*Numerical*)

सक॰ सकर्मक, सकर्मक क्रिया (*Transitive Verb*)

सना॰ सर्वनाम, सार्वनामिक (*Pronoun*)

सप्त॰ सप्तमी विभक्ति, (में, पर, पे) (*Locative Case*)

सब॰ सहबहुव्रीहि समास

संबो॰ संबोधन (*Vocative Case*)

स्त्री॰ स्त्रीलिंग, स्त्रीलिंगी नाम (*Feminine Gender*)

स्वादि॰ स्वादि, √सु इत्यादि का पांचवां गण

← पिछला पद आगे वाले पद से होता है

→ पिछले पद से आगे वाला पद होता है

↑ पहले दिया हुआ, ऊपर देखिए

(↑) इसी श्लोक में पहले आया हुआ, इसी श्लोक में पहले देखिए

↓ नीचे आया हुआ, आगे दिया हुआ

√ मूल, धातु, मूलधातु

खंड १

गीता का शब्दकोश

NOTE
The numerals after the Sanskrit Words show
where this word appears for the first time in the Gita.
e.g 1.10 **= First appearence in : Chapter 1, Shloka 10**

(अ)

अ 1.10, अव्य॰ नञ् प्रत्यय (अन्↓, न↓, ना, नहीं; विरुद्धार्थ); 10.33, पु॰ (अ वर्ण, अकार↓)

अकर्तारम् 4.13, पु॰ द्वितीं॰ एक॰ अकर्तारम् (अकर्ता को, न करने वाले को); द्वि॰ अकर्तारौ; बहु॰ अकर्तॄन् ←वि॰ नत॰ अकर्तृ (अकर्ता, न करने वाला) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ कर्तृ↓ (देखिए कर्तारम्↓)

अकर्म 4.16, प्रथ॰-द्वितीं॰ एक॰ अकर्म (करने के लिए जो- अनुचित, अपात्र, अयोग्य, निरर्थक है -वह अथवा उसको); द्वि॰ अकर्मणी; बहु॰ अकर्माणि ←न॰ अकर्मन्↓

अकर्मकृत् 3.5, नत॰ (कर्म न करता हुआ, निष्क्रिय; कर्म के विना, कर्म छोड़ कर, कर्म के सिवाय; क्रियारहित; अनुचित काम करने वाला, कर्म न करने वाला) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ कर्मकृत् (क्रियाशील; उचित काम करने वाला, कर्म करता हुआ, कर्म करने वाला) ←8तना॰√कृ (करना)

अकर्मणः 3.8, (1) पंच॰ एक॰ अकर्मणः (अकर्म की अपेक्षा); द्वि॰ अकर्मभ्याम्; बहु॰ अकर्मभ्यः; (2) 4.17, षष्ठी॰ एक॰ अकर्मणः (अकर्म का); द्वि॰ अकर्मणोः; बहु॰ अकर्मणाम् ←न॰ अकर्मन्↓

अकर्मणि 2.47, सप्त॰ एक॰ अकर्मणि (अकर्मण्य में); द्वि॰ अकर्मणोः; बहु॰ अकर्मसु

←न॰ अकर्मन्↓

अकर्मन् 2.47, (1) वि॰ नब॰ न विद्यते कर्म यस्य स: (जिसके पास करने के लिए कुछ भी नहीं अथवा जो कुछ भी नहीं करता वह; अयोग्य); (2) न॰ नत॰ न कर्म (कार्याभाव, अनुचित कार्य, अयोग्य कर्म; कर्म न करना; पाप); (3) गीता 4.18–4.21 में (अफल कर्म, निष्कर्म; जिसका कोई कर्म संकल्प नहीं है, जो कर्मफल से अलिप्त है वह कर्म करके भी कुछ नहीं करता अथवा अ(फल)कर्म करता है, केवल शरीर मात्र से ही कर्म करना और उसमें मन का संबंध न होने से वह कर्म अकर्म है) ←अव्य॰ अ↑ + न॰ कर्मन्↓

अकल्मषम् 6.27, पु॰ द्विती॰ एक॰ अकल्मषम् (पाप से मुक्त हुए –को); द्वि॰ अकल्मषौ; बहु॰ अकल्मषान् ←वि॰ नब॰ अकल्मष, नास्ति कल्मषम् यस्य स: (पाप से मुक्त हुआ, अनघ↓, निष्पाप) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ न॰ कल्मष↓

अकार: 10.33, प्रथ॰ एक॰ अकार: (अ); द्वि॰ अकारौ; बहु॰ अकारा: ←पु॰ अकार (अ, अ वर्ण, अ अक्षर, अ ध्वनि, अ शब्द) ←पु॰ अ वर्ण + वि॰ कार↓

अकार्य 16.24, (1) वि॰ नब॰ न विद्यते कार्यम् यस्मिन् तत् (अनुचित, विपरीत, करने के लिए अयोग्य); (2) न॰ नत॰ न कार्यम् (अनुचित कार्य, विपरीत कार्य; कुकर्म, अपराध, गुनाह, दोष) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ अथवा न॰ कार्य↓

अकार्यम् 18.31, न॰ प्रथ॰–द्विती॰ एक॰ अकार्यम् (अकार्य–को); द्वि॰ अकार्ये; बहु॰ अकार्याणि ←वि॰ अकार्य↑

अकीर्ति 2.2, स्त्री॰ नत॰ न कीर्ति: (अपयश, अयश; अपभाषण, अभिशंसन, उपक्रोश, कुत्सा, गर्हा, निंदा↓, परिवाद, भर्त्सना, विकत्थन; अपकीर्ति, अप्रतिष्ठा, कलंक, दुष्कीर्ति, बदनामी, मानहानि) ←अव्य॰ अ↑ + स्त्री॰ कीर्ति↓

अकीर्ति: 2.34, प्रथ॰ एक॰ अकीर्ति: (अपयश; दुष्कीर्ति); द्वि॰ अकीर्ती; बहु॰ अकीर्तय: ←स्त्री॰ अकीर्ति↑

अकीर्तिकरम् 2.2, न॰ प्रथ॰–द्विती॰ एक॰ अकीर्तिकरम् (कीर्ति न देने वाला, ॰न देने वाले को); द्वि॰ अकीर्तिकरे; बहु॰ अकीर्तिकराणि ←वि॰ नत॰ अकीर्तिकर, न कीर्ति: करोति इति (अपकीर्ति, अप्रतिष्ठा, बदनामी, बे–आबरू, बेइज्जत, मानहानि –करने वाला; कीर्ति न देने वाला) ←स्त्री॰ अकीर्ति↑ + वि॰ कर↓

अकीर्तिम् 2.34, द्विती॰ एक॰ अकीर्तिम् (अपयश को; दुष्कीर्ति को); द्वि॰ अकीर्ती; बहु॰ अकीर्ती: ←स्त्री॰ अकीर्ति↑

अकुर्वत 1.1, लङ् अनद्य अपूर्न भूत॰ आत्म॰ अन्य॰ एक॰ अकुरुत; द्वि॰ अकुर्वाताम्; बहु॰ अकुर्वत (उन्होंने किया, वे कर रहे थे) ←8तना॰√कृ (करना)

अकुशलम् 18.10, न॰ प्रथ॰–द्विती॰ एक॰ अकुशलम् (कष्ट दायक कर्म, ॰कर्म को); द्वि॰ अकुशले; बहु॰ अकुशलानि ←(1) वि॰ नब॰ अकुशल, नास्ति कुशलम् यस्मिन् (कष्ट, पीड़ा –दायक; अमंगल, कठिन, कर्कर, दुष्कर, दुस्साध्य, मुश्किल; अनाड़ी; अरिष्ट, अशुभ↓); (2) न॰ नत॰ अकुशल, न कुशलम् (अहित, आपत्ति, आफत, विपत्ति, विपदा, संकट) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ कुशल↓

अकृत 3.18, वि॰ नत॰ न कृतम् (अधुरा, अपूर्ण, आधा; गलत, भूल किया हुआ; न किया हुआ) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ कृत↓

अकृतबुद्धित्वात् 18.16, पंच॰ एक॰ अकृतबुद्धित्वात् (अनुचित धारणा से); द्वि॰ अकृतबुद्धित्वाभ्याम्; बहु॰ अकृतबुद्धित्वेभ्य: ←न॰ तस॰ अकृतबुद्धित्व, न कृतम् बुद्धित्वम् (अनुचित, गलत, भूल, भ्रान्त –धारणा, समझ) ←वि॰ अकृत↑ + स्त्री॰ बुद्धि↓

अकृतात्मान: 15.11, पु॰ प्रथ॰ एक॰ अकृतात्मा; द्वि॰ अकृतात्मानौ; बहु॰ अकृतात्मान: (असुसंस्कृत आत्मा वाले लोग) ←वि॰ नब॰ अकृतात्मन्, न कृत: आत्मा यस्य स: (असंस्कृत, अज्ञानी, मूढ़↓, मूर्ख) ←अव्य॰ अ↑ + पु॰ कृतात्मन् (सुसंस्कृत आत्मा, ज्ञानी↓) ←वि॰ कृत↓ + पु॰ आत्मन्↓

अकृतेन 3.18, न॰ तृती॰ एक॰ अकृतेन (न करने से); द्वि॰ अकृताभ्याम्; बहु॰ अकृतै: ←वि॰ अकृत↑

अकृत्स्नविद: 3.29, पु॰ द्विती॰ एक॰ अकृत्स्नविद्; द्वि॰ अकृत्स्नविदौ; बहु॰ अकृत्स्नविद: (बुद्धिहीन लोगों को) ←वि॰ अकृत्स्नविद् (अज्ञ↓, मंद बुद्धि का, मूढ़↓) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ कृत्स्नविद्↓

अक्रिय 6.1, नब॰ नास्ति क्रिया यस्मिन् (क्रियाहीन, क्रियाशून्य, निष्क्रिय) ←अव्य॰ अ↑ + वि॰ क्रिय (क्रियाशील) ←स्त्री॰ क्रिया↓

अक्रिय: 6.1, पु॰ प्रथ॰ एक॰ अक्रिय: (न करने वाला); द्वि॰ अक्रियौ; बहु॰ अक्रिया: ←वि॰ अक्रिय↑

अक्रोध: 16.2, प्रथ॰ एक॰ अक्रोध: (क्रोधशून्यता); द्वि॰ अक्रोधौ; बहु॰ अक्रोधा: ←पु॰ नत॰ अक्रोध, न क्रोध: (क्रोधाभाव, शांति↓); वि॰ नब॰ नास्ति क्रोध: यस्य (क्रोधशून्य, शान्त↓) ←अव्य॰ अ↑ + पु॰ क्रोध↓

अक्लेद्य: 2.24, पु॰ प्रथ॰ एक॰ अक्लेद्य: (न भीगने वाला); द्वि॰ अक्लेद्यौ; बहु॰

खंड २

गीता की नि:शेष शब्द अनुक्रमणी

(श्लोक सूची के लिए आगामी प्रकरण देखिए)

(अ)

अकर्तारम् 4.13, 13.30
अकर्म 4.16, 4.18
अकर्मकृत् 3.5
अकर्मण: 3.8, 4.17
अकर्मणि 2.47, 4.18
अकल्मषम् 6.27
अकार: 10.33
अकार्यम् 18.31
अकीर्ति: 2.34
अकीर्तिकरम् 2.2
अकीर्तिम् 2.34
अकुर्वत 1.1
अकुशलम् 18.10
अकृतबुद्धित्वात् 18.16
अकृतात्मान: 15.11
अकृतेन 3.18
अकृत्स्नविद: 3.29
अक्रिय: 6.1
अक्रोध: 16.2
अक्लेद्य: 2.24
अखिलम् 4.33, 7.29, 15.12
अगतासून् 2.11
अग्नि: 4.37, 8.24, 9.16, 11.39, 18.48
अग्नौ 15.12
अग्रे 18.37–39
अघम् 3.13
अघायु: 3.16
अङ्गानि 2.58
अचरम् 13.16
अचल: 2.24
अचलप्रतिष्ठम् 2.70
अचलम् 6.13, 12.3
अचला 2.53
अचलाम् 7.21
अचलेन 8.10
अचापलम् 16.2
अचिन्त्य: 2.25
अचिन्त्यम् 12.3
अचिन्त्यरूपम् 8.9
अचिरेण 4.39
अचेतस: 3.32, 15.11, 17.6
अच्छेद्य: 2.24
अच्युत 1.21, 11.42, 18.73

अजः 2.20, 4.6
अजम् 2.21, 7.25, 10.3, 10.12
अजस्रम् 16.19
अजानता 11.41
अजानन्तः 7.24, 9.11, 9.11, 13.26
अणीयांसम् 8.9
अणोः 8.9
अतः 2.12, 9.24, 12.8, 13.12, 15.18
अतत्त्वार्थवत् 18.22
अतन्द्रितः 3.23
अतपस्काय 18.67
अति 6.11, 6.16, 18.77
अतितरन्ति 13.26
अतिनीचम् 6.11
अतिरिच्यते 2.34
अतिवर्तते 6.44, 14.21
अतीतः 14.21, 15.18
अतीत्य 14.20
अतीन्द्रियम् 6.21
अतीव 12.20
अत्यद्भुतम् 18.77
अत्यन्तम् 6.28
अत्यर्थम् 7.17
अत्यश्नतः 6.16
अत्यागिनाम् 18.12
अत्युच्छ्रितम् 6.11
अत्येति 8.28
अत्र 1.4; 1.23; 4.16, 8.2,4–5; 10.7; 18.14
अथ 1.20, 2.26, 2.33, 3.36, 10.25, 11.5, 11.40, 12.9, 12.11, 18.58
अथः 4.35
अथवा 6.42, 10.42, 11.42
अदम्भित्वम् 13.8
अदक्षिणम् 17.13
अदाह्यः 2.24
अदीनि 2.28
अदृष्टपूर्वम् 11.45
अदृष्टपूर्वाणि 11.6
अदेशकाले 17.22
अद्भुतम् 11.20, 18.74, 18.76–77
अद्रोहः 16.3
अद्वेष्टा 12.13
अधः 14.18, 15.2
अधमाम् 16.20
अधर्मः 1.40
अधर्मम् 18.31–3
अधर्माभिभवात् 1.41
अधिगच्छति 2.64, 2.71, 4.39, 5.6, 6.24, 6.15, 14.19, 18.49
अधिदैवतम् 8.4
अधिदैवम् 8.1
अधिभूतम् 8.1, 8.4
अधियज्ञः 8.2, 8.4
अधिष्ठानम् 3.40, 18.14
अधिष्ठाय 4.6, 15.9
अध्यक्षेण 9.10
अध्यात्मचेतसा 3.30

खंड ३
गीता की श्लोक अनुक्रमणी

(अ)

अकीर्तिं चापि भूतानि 2.34
अग्निर्ज्योतिरहः 8.24
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयम् 2.24
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा सन् 4.6
अत्र शूरा महेष्वासा 1.4
अथ केन प्रयुक्तोऽयम् 3.36
अथ चित्तं समाधातुम् 12.9
अथ चेत्त्वमिमं 2.33
अथ चैनं नित्यजातं 2.26
अथवा बहुनैतेन 10.42
अथवा योगिनामेव कुले 6.42
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा 1.20
अथैतदप्यशक्तोऽसि 12.11
अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि 11.45
अदेशकाले 17.22
अद्वेष्टा सर्वभूतानां 12.13
अधर्मं धर्ममिति 18.32
अधर्माभिभवात्कृष्ण 1.41
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य 15.2
अधिभूतं क्षरो भावः 8.4
अधियज्ञः कथं कोऽत्र 8.2
अधिष्ठानं तथा कर्ता 18.14
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् 13.12
अध्येष्यते च य इमम् 18.70
अनन्तविजयं राजा 1.16
अनन्तश्चास्मि नागानां 10.29
अनन्यचेताः सततं यो 8.14
अनन्याश्चिन्तयन्तो माम् 9.22
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष 12.16
अनादित्वान्निर्गुणत्वात् 13.32
अनादिमध्यान्तम् 11.19
अनाश्रितः कर्मफलं 6.1
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च 18.12
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं 17.15
अनुबन्धं क्षयं 18.25
अनेकचित्तविभ्रान्ता 16.16
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं 11.16
अनेकवक्त्रनयनम् 11.10
अन्तकाले च मामेव 8.5
अन्तवत्तु फलं तेषां 7.23
अन्तवन्त इमे देहाः 2.18
अन्नाद्भवन्ति भूतानि 3.14
अन्ये च बहवः शूराः 1.9
अन्ये त्वेवमजानन्तः 13.26
अपरं भवतो जन्म 4.4
अपरे नियताहाराः 4.30
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं 7.5
अपर्याप्तं तदस्माकम् 1.10
अपाने जुह्वति प्राणं 4.29

This Book is available at
www.books-india.com